



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

कमलेश्वर की कहानियाँ: बदलते सामाजिक मूल्य और आधुनिकता-बोध

*¹ कृष्ण कुमार

*¹ शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, आई.एस.बी.एम. विश्वविद्यालय नवापारा (कोसमी), छुरा, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (QJIF): 8.4

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 24/April/2026

Accepted: 21/May/2026

सारांश:

कमलेश्वर नई कहानी आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में से एक है। उनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं, विडम्बनाओं और मानवीय संवेदनाओं के संकट को अत्यंत सशक्त रूप में अभिव्यक्त करती हैं। आधुनिकता ने जहाँ मनुष्य को भौतिक सुख सुविधाएँ प्रदान की हैं वहीं उसे अकेलापन, असुरक्षा, संबंधों में कृत्रिमता और मूल्यहीनता भी दी है। कमलेश्वर की कहानियाँ इन्हीं अंतर्विरोधों को उजागर करती हैं। उनकी कहानियों में मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासदी बार-बार सामने आती है। आर्थिक दबाव, बेरोजगारी, पारिवारिक विघटन और सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने व्यक्ति को भीतर से खोखला बना दिया है। 'राजा निरबंसिया' जैसी कहानी में सत्ता और सामाजिक प्रतिष्ठा की झूठी चमक के पीछे छिपी मानवीय विडम्बना को चित्रित किया गया है। यहाँ व्यक्ति अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करता है, पर अंततः परिस्थितियों का शिकार बन जाता है। कमलेश्वर की कहानियों में नारी जीवन की पीड़ा भी आधुनिक विडम्बनाओं का महत्वपूर्ण पक्ष है। आधुनिक समाज में स्त्री को स्वतंत्रता का भ्रम तो मिला है, परंतु वास्तविक समानता अभी भी दूर है। दाम्पत्य संबंधों में बढ़ती दूरी, स्वार्थ और संवादहीनता उनके कथानक का हिस्सा बनते हैं। व्यक्ति संबंधों को निभाने के बजाय उपयोग करने लगा है यह आधुनिकता की बड़ी विडम्बना है। शहरी जीवन की भागदौड़, नैतिक मूल्यों का हास और मनुष्य का मशीन बन जाना भी उनकी कहानियों में उभरता है। आधुनिक मनुष्य भीड़ में रहकर भी अकेला है। संवेदनहीनता और आत्मकेन्द्रित जीवन शैली ने सामाजिक रिश्तों को कमजोर कर दिया है। कमलेश्वर इन स्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और व्यंग्यात्मक प्रभाव से युक्त है, जो आधुनिक जीवन की विसंगतियों को और अधिक तीव्रता से सामने लाती है। वे किसी आदर्शवादी समाधान की बजाय यथार्थ का आईना प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं अकेलापन, मूल्य संकट, सामाजिक असमानता और संबंधों के विघटन का सजीव दस्तावेज हैं। वे आधुनिक मनुष्य की त्रासदी को समझने और संवेदना को पुनर्जीवित करने का आह्वान करती हैं।

*Corresponding Author

कृष्ण कुमार

शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
आई.एस.बी.एम. विश्वविद्यालय नवापारा
(कोसमी), छुरा, गरियाबंद, छत्तीसगढ़,
भारत।

मुख्य शब्द: आधुनिकता, नई कहानी आंदोलन, मूल्य संकट, पारिवारिक विघटन, स्त्री चेतना, अस्तित्व बोध, सामाजिक यथार्थ, जीवन की विसंगतियाँ, मानवीय संवेदना।

प्रस्तावना:

आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक और औद्योगिक विकास का युग माना जाता है। आज का मनुष्य भौतिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी मानसिक रूप से असुरक्षित, अकेला और तनावग्रस्त दिखाई देता है। पारंपरिक मूल्यों का क्षरण, संबंधों में औपचारिकता, प्रतिस्पर्धा की तीव्रता और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति ने जीवन को जटिल बना दिया है। आधुनिक जीवन की यही विडम्बनाएँ साहित्य का प्रमुख विषय बनी हैं। हिंदी कथा साहित्य में 'नई कहानी' आंदोलन ने इन बदलते सामाजिक यथार्थों को केंद्र में रखा। इस आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षरों में कमलेश्वर का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आधुनिक समाज

की अंतर्विरोधी स्थितियों, मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासदी और व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा को अपनी कहानियों में सजीव रूप से चित्रित किया। उनकी रचनाएँ केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करती बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक संरचना और सामाजिक परिवेश का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि मनुष्य सुविधा संपन्न होते हुए भी, नौकरी की असुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा की होड़ और पारिवारिक विघटन ने व्यक्ति को भीतर से कमजोर कर दिया है। कमलेश्वर की कहानियाँ इन परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण करती हैं। विशेषतः शहरी जीवन की आपाधापी, मूल्य संकट और द्वंद्व नैतिक रूप से दिखाई

देते हैं। उनकी रचनाएँ पाठक को यह सोचने पर विवश करती है कि प्रगति के नाम पर कहीं हम अपनी संवेदनाएँ तो नहीं खो रहे। आधुनिकता ने जहाँ स्वतंत्रता और अधिकारों की चेतना को बढ़ाया, वहीं व्यक्ति को अकेलेपन और असुरक्षा के भाव से भी भर दिया। भीड़ में रहकर भी अकेलापन अनुभव करना आधुनिक जीवन की एक बड़ी विडम्बना है। कमलेश्वर की कहानियाँ इस अकेलेपन को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। उनके पात्र परिस्थितियों से जूझते हुए दिखाई देते हैं, किंतु उनके भीतर कहीं न कहीं संवेदना और मानवीयता की लौ जलती रहती है। भाषा और शैली की दृष्टि से भी कमलेश्वर की कहानियाँ विशिष्ट हैं। सरल, सहज और संवादप्रधान शैली उनके कथ्य को प्रभावी बनाती है। कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक युग के सामाजिक-सांस्कृतिक संकट का दर्पण हैं और मनुष्य को अपनी संवेदनाओं तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की प्रेरणा देती हैं। वे व्यंग्य और यथार्थ के माध्यम से आधुनिक समाज की विसंगतियों को उजागर करते हैं। इस प्रकार आधुनिक जीवन की विडम्बनाएँ और कमलेश्वर की कहानियाँ एक-दूसरे से गहरे रूप में जुड़ी हुई हैं।

आधुनिकता परिप्रेक्ष्य

आधुनिकता एक व्यापक और बहुआयामी अवधारणा है जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से निर्मित होती है। यह केवल समय का संकेत नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि और विचार प्रणाली का भी द्योतक है। आधुनिकता का उद्भव मुख्यतः औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक खोजों और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। इसने मनुष्य के सोचने समझने के ढंग, जीवन शैली और सामाजिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यक्तिवाद को विशेष महत्व दिया गया। परंपरागत मान्यताओं और रूढ़ियों को चुनौती देकर मनुष्य ने स्वतंत्र चिंतन की दिशा में कदम बढ़ाया। लोकतंत्र, मानवाधिकार, समानता और स्वतंत्रता जैसे सिद्धांत आधुनिकता की देन हैं। इस दृष्टि से आधुनिकता ने समाज को प्रगतिशील दिशा प्रदान की है। आर्थिक स्तर पर आधुनिकता का संबंध औद्योगीकरण, नगरीकरण और पूंजीवाद से है। उद्योगों के विकास और रोजगार के नए अवसरों ने लोगों को गाँवों से शहरों की ओर आकर्षित किया। इससे शहरी संस्कृति का विकास हुआ किंतु साथ ही पारंपरिक पारिवारिक संरचना कमजोर हुई। संयुक्त परिवारों का विघटन और एकल परिवारों की वृद्धि आधुनिक जीवन का एक प्रमुख परिणाम है। व्यक्ति अब परिवार और समाज से अधिक अपने निजी हितों और आकांक्षाओं को महत्व देने लगा है। सामाजिक दृष्टि से आधुनिकता ने स्त्री पुरुष समानता, शिक्षा के प्रसार और सामाजिक न्याय की चेतना को बल दिया। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के अधिकार प्राप्त हुए। दलित, आदिवासी और वंचित वर्गों में भी अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। किंतु दूसरी ओर उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और भौतिकता की अंधी दौड़ ने मानवीय मूल्यों को चुनौती दी है। राजनीतिक क्षेत्र में आधुनिकता का संबंध लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, संवैधानिकता और नागरिक अधिकारों से है। राष्ट्र राज्य की अवधारणा, विधि का शासन और जनप्रतिनिधित्व आधुनिक राजनीतिक चिंतन के प्रमुख तत्व हैं। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राज्य नागरिकों के कल्याण के लिए उत्तरदायी माना जाता है। परंतु राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और सत्ता संघर्ष आधुनिक राजनीति की विडम्बनाएँ भी हैं। सांस्कृतिक स्तर पर आधुनिकता ने वैश्वीकरण और संचार क्रांति को जन्म दिया। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने दुनिया को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। इससे सांस्कृतिक आदान प्रदान बढ़ा, किंतु पारंपरिक संस्कृतियों और भाषाओं के सामने अस्तित्व का संकट भी उत्पन्न हुआ। आधुनिकता का एक महत्वपूर्ण पक्ष

व्यक्तिवाद है। व्यक्ति अब अपनी पहचान, स्वतंत्रता और आत्म सम्मान को सर्वोपरि मानता है। यह प्रवृत्ति सकारात्मक है, क्योंकि इससे आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का विकास होता है। लेकिन जब व्यक्तिवाद अत्यधिक हो जाता है, तो सामाजिक संबंधों में दूरी और अकेलापन उत्पन्न होता है। आधुनिक मनुष्य भीड़ में रहकर भी अकेला महसूस करता है यह आधुनिक जीवन की एक प्रमुख विडम्बना है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन भी हुआ है। पारंपरिक नैतिकता की जगह तर्क और परिस्थितियों पर आधारित नैतिक दृष्टि ने ली है। कमलेश्वर को प्रगतिशील एवं मुक्तिकामी मानवीय भावनाओं का सशक्त कथाकार माना जाता है। “कमलेश्वर मुख्यतः शोषण विरोधी चेतना के मध्यवर्गीय भावना, आकांक्षा और मुक्तिकामी चेतना के रचनाकार प्रमाणित होते हैं। साथ ही वे निम्न वर्ग के संघर्ष और जागरण स्वर को पर्याप्त महत्त्व देते रहे हैं। कमलेश्वर की ख्याति का मुख्य आधार उनकी कहानियाँ ही हैं। उन्होंने मध्यवर्ग को अपनी रचना का विषय बनाया। एक प्रगतिशील कथाकार होने के कारण उनमें जीवन से प्रतिबद्धता एवं शाश्वत मूल्यों के विद्रोह का आग्रह विद्यमान है। ‘कमलेश्वर ने अराजकता की स्थिति को पहचानने का प्रयास किया और अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन को पहचानने का प्रयास किया और अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन को विभिन्न स्तरों पर वहन करने वाले उससे संपृक्त केन्द्रीय पात्रों की तलाश की, जिसकी साक्षी है ‘माँस का दरिया’, ‘खोई हुई दिशाएँ’, ‘दिल्ली में एक मौत’, ‘एक रूकी हुई जिन्दगी’, ‘मुर्दों की दुनिया’, ‘धूल उड़ जाती है’ आदि कहानियाँ हैं। “1 इससे विचारों में लचीलापन आया, परंतु नैतिक अनिश्चितता और मूल्य संकट भी बढ़ा है। साहित्य और कला में आधुनिकता ने यथार्थवाद, अस्तित्ववाद और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। लेखक और कलाकार आधुनिक जीवन की जटिलताओं, अकेलेपन और संघर्ष को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करते हैं। “आधुनिक साहित्य में व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा, सामाजिक विसंगतियाँ और मूल्य संकट प्रमुख विषय बन गए हैं। अंततः कहा जा सकता है कि आधुनिकता एक दोधारी तलवार की तरह है। इसने मनुष्य को ज्ञान, स्वतंत्रता और प्रगति के अवसर प्रदान किए, परंतु साथ ही उसे तनाव, असुरक्षा और मूल्यहीनता की चुनौतियों से भी रूबरू कराया। आधुनिक परिप्रेक्ष्य को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसी के माध्यम से हम वर्तमान समाज की समस्याओं और संभावनाओं का सही आकलन कर सकते हैं। “2 आधुनिकता का उद्देश्य केवल भौतिक उन्नति नहीं बल्कि मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों के साथ संतुलित विकास होना चाहिए।

आधुनिक जीवन की चुनौतियाँ या जटिलताएं

आधुनिक युग को प्रगति विज्ञान और तकनीकी विकास का युग कहा जाता है परंतु इसी के साथ यह अनेक चुनौतियों और जटिलताओं से भी भरा हुआ है। भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि ने जीवन को सरल अवश्य बनाया है किंतु मानसिक तनाव, अकेलापन, मूल्य-संकट और संबंधों में विघटन जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। “आधुनिक मनुष्य बाहरी रूप से सफल दिखता है परंतु भीतर से असुरक्षा और संघर्ष का अनुभव करता है। हिंदी कथा साहित्य में इन जटिलताओं को जिस गहराई से अभिव्यक्त किया गया है उसमें कमलेश्वर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कमलेश्वर ‘नई कहानी’ आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में रहे हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं और मानसिक द्वंद्वों का सजीव चित्रण करती हैं। आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी चुनौती है अस्तित्व की चिंता। व्यक्ति अपनी पहचान और सम्मान को बचाए रखने के लिए निरंतर संघर्ष करता है। आर्थिक अस्थिरता, बेरोजगारी और सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने जीवन को जटिल बना दिया है। कमलेश्वर की कहानियों में पात्र अक्सर इन्हीं परिस्थितियों से जूझते हुए दिखाई देते हैं। आर्थिक दबाव आधुनिक जीवन की एक गंभीर समस्या है। “6 बढ़ती महंगाई, सीमित आय और

सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की होड़ ने मध्यमवर्ग को सबसे अधिक प्रभावित किया है। "कमलेश्वर की कहानियों में यह वर्ग विशेष रूप से केंद्र में रहता है। उनके पात्र साधारण लोग हैं, जो छोटे-छोटे सपनों और संघर्षों के साथ जीवन जीते हैं। वे दिखाते हैं कि आर्थिक विवशता केवल बाहरी समस्या नहीं, बल्कि यह व्यक्ति के आत्मविश्वास और संबंधों को भी प्रभावित करती है। संबंधों में विघटन आधुनिक जीवन की एक और जटिलता है। संयुक्त परिवारों के टूटने और एकल परिवारों के बढ़ने से सामाजिक संरचना में परिवर्तन आया है। दाम्पत्य जीवन में संवाद की कमी, स्वार्थ और अहंकार के कारण दूरी बढ़ती जा रही है। कमलेश्वर इन स्थितियों को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित करते हैं। उनके कथा-संसार में पति-पत्नी, माता-पिता और संतानों के बीच भावनात्मक दूरी स्पष्ट दिखाई देती है। नारी जीवन की चुनौतियाँ भी उनकी कहानियों का महत्वपूर्ण पक्ष हैं।⁹ आधुनिक समाज ने स्त्री को शिक्षा और रोजगार के अवसर तो दिए, परंतु मानसिकता में समानता का भाव पूरी तरह विकसित नहीं हुआ। स्त्री को आज भी अनेक सामाजिक बंधनों और अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। कमलेश्वर इन विसंगतियों को उजागर करते हुए स्त्री की पीड़ा और संघर्ष को अभिव्यक्त करते हैं। शहरी जीवन की भागदौड़ और भीड़ में अकेलापन भी आधुनिक जीवन की जटिलताओं में शामिल है। तकनीकी साधनों ने लोगों को जोड़ने का कार्य किया है, परंतु भावनात्मक स्तर पर व्यक्ति अधिक अकेला हो गया है। कमलेश्वर के पात्र भीड़ में रहकर भी अकेले हैं। वे संवाद की तलाश में हैं, परंतु परिस्थितियाँ उन्हें आत्मकेन्द्रित बना देती हैं। मूल्य संकट आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौती है। पारंपरिक नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है और भौतिक सफलता को ही जीवन का उद्देश्य मान लिया गया है। कमलेश्वर की कहानियाँ इस मूल्यहीनता पर तीखा प्रहार करती हैं। वे दिखाते हैं कि जब मनुष्य केवल स्वार्थ और लाभ को महत्व देता है, तो समाज में संवेदनशीलता और मानवीयता कमजोर हो जाती है। कमलेश्वर की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। वे जटिल सामाजिक समस्याओं को सामान्य जीवन की घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ उपदेशात्मक नहीं हैं, बल्कि यथार्थ का आईना प्रस्तुत करती हैं। वे पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि आधुनिकता की इस दौड़ में हम क्या खो रहे हैं। अंततः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक जीवन की चुनौतियों और जटिलताओं का सशक्त चित्रण करती हैं। वे हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्यों और संबंधों का संरक्षण भी आवश्यक है। आधुनिक जीवन की समस्याओं का समाधान केवल भौतिक विकास में नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, नैतिकता और पारस्परिक समझ में निहित है। कमलेश्वर का साहित्य हमें इसी संतुलन की ओर प्रेरित करता है और आधुनिक मनुष्य को आत्ममंथन का अवसर प्रदान करता है।

कमलेश्वर की कहानियाँ और आधुनिक जीवन मूल्य

हिंदी कथा-साहित्य में 'नई कहानी' आंदोलन ने जिस सामाजिक यथार्थ और बदलते जीवन मूल्यों को केंद्र में रखा, उसमें कमलेश्वर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मध्यमवर्गीय संघर्षों और मूल्य-संकट को अपनी कहानियों में सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया। आधुनिक जीवन मूल्य जहाँ एक ओर स्वतंत्रता, समानता और व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा को महत्व देते हैं, वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावाद, स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा जैसी प्रवृत्तियों को भी जन्म देते हैं। कमलेश्वर की कहानियाँ इन्हीं सकारात्मक और नकारात्मक मूल्यों के द्वंद्व को उजागर करती हैं। आधुनिक जीवन मूल्यों में व्यक्तिवाद प्रमुख है। व्यक्ति अपनी स्वतंत्र पहचान, आत्मसम्मान और अधिकारों को सर्वोपरि मानता है। कमलेश्वर के पात्र भी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करते

दिखाई देते हैं। वे सामाजिक दबावों और आर्थिक परिस्थितियों के बीच अपने अस्तित्व को बचाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ व्यक्तित्व की गरिमा और आत्मसम्मान के आधुनिक मूल्य को रेखांकित करती हैं। समानता और सामाजिक न्याय भी आधुनिक जीवन के महत्वपूर्ण मूल्य हैं। "कमलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में वर्गीय असमानता, आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय को उजागर किया। उनके पात्र प्रायः मध्यमवर्गीय या निम्नवर्गीय पृष्ठभूमि से आते हैं, जो संघर्ष और अभाव से जूझते हैं। वे यह संकेत देते हैं कि जब तक समाज में समान अवसर और न्याय की व्यवस्था नहीं होगी, तब तक आधुनिकता अधूरी रहेगी। नारी-स्वतंत्रता और स्त्री-पुरुष समानता आधुनिक जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण आयाम है।⁷ कमलेश्वर की कहानियों में स्त्री पात्र केवल सहायक भूमिका में नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ उपस्थित होते हैं। वे स्त्री की भावनाओं, संघर्षों और उसकी आत्मनिर्भरता को संवेदनशीलता के साथ चित्रित करते हैं। आधुनिक समाज में स्त्री को शिक्षा और रोजगार के अवसर मिले हैं, परंतु सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन अभी भी अधूरा है। कमलेश्वर इन विरोधाभासों को उजागर करते हुए समानता और सम्मान के मूल्य को रेखांकित करते हैं। परंतु आधुनिक जीवन-मूल्यों का एक नकारात्मक पक्ष भी है उपभोक्तावाद और भौतिकता। आधुनिक मनुष्य सफलता और धन को ही जीवन का लक्ष्य मान बैठा है। इस प्रवृत्ति के कारण संबंधों में आत्मीयता कम होती जा रही है। कमलेश्वर की कहानियाँ इस मूल्य-संकट को गहराई से प्रस्तुत करती हैं। उनके पात्र कभी-कभी स्वार्थ और महत्वाकांक्षा के कारण मानवीय संबंधों को पीछे छोड़ देते हैं, जिससे जीवन में रिक्तता और अकेलापन उत्पन्न होता है। "दाम्पत्य संबंधों और पारिवारिक जीवन में आए परिवर्तन भी आधुनिक जीवन-मूल्यों का परिणाम हैं। संयुक्त परिवारों का विघटन और एकल परिवारों की वृद्धि ने सामाजिक संरचना को बदल दिया है। कमलेश्वर इन परिवर्तनों के प्रभाव को अपनी कहानियों में उभारते हैं। वे दिखाते हैं कि आधुनिकता ने स्वतंत्रता तो दी है, परंतु साथ ही भावनात्मक दूरी भी बढ़ाई है। कमलेश्वर की कहानियों में नैतिक मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन भी दिखाई देता है। वे पारंपरिक नैतिकता को अंधस्वीकार नहीं करते, बल्कि परिस्थितियों के संदर्भ में उसका परीक्षण करते हैं। आधुनिक जीवन में नैतिकता का आधार तर्क और मानवीय संवेदना है।¹⁰ उनके पात्र गलतियाँ करते हैं, परंतु उनके भीतर संवेदनशीलता और पश्चात्ताप की भावना भी मौजूद रहती है। यही आधुनिक नैतिक दृष्टि का संकेत है। भाषा और शैली की दृष्टि से कमलेश्वर सरल, सहज और संवादप्रधान शैली का प्रयोग करते हैं। उनकी कहानियाँ पाठक को सीधे प्रभावित करती हैं। वे उपदेशात्मक नहीं हैं, बल्कि जीवन की सच्चाइयों को सामने रखती हैं। उनकी रचनाएँ यह प्रश्न उठाती हैं कि आधुनिक जीवन में कौन-से मूल्य हमें आगे ले जा रहे हैं और कौन-से हमें भीतर से खोखला कर रहे हैं। अंततः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक जीवन-मूल्यों का यथार्थपरक और संतुलित चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे आधुनिकता के सकारात्मक पक्ष स्वतंत्रता, समानता और आत्मसम्मान को स्वीकार करते हैं, परंतु उसके नकारात्मक पक्ष स्वार्थ, उपभोक्तावाद और मूल्यहीनता की आलोचना भी करते हैं। "स्वाधीन भारत में आए निकायों की यथार्थ अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है कमलेश्वर का रचना संसार अपने परिवेश और पर्यावरण के प्रति गहरे लगाव से भरा हुआ है। कमलेश्वर का कथा साहित्य एक ओर राष्ट्र की यथार्थ अवधारणाओं का चित्रण करता है तो दूसरी ओर वह महात्मा गांधी की अहिंसा और बुद्ध की करुणा जैसी मानवीय संवेदनाओं से भी संपृक्त है। स्वाधीन भारत के विकास की प्रमुख गतिरोध सांप्रदायिक समस्या का प्रतिरोध और उसकी वीभत्सता का यथार्थ चित्रण कमलेश्वर की रचनाओं में हुआ है। कथाकार कमलेश्वर स्वाधीन भारत के उन प्रमुख रचनाकारों में से हैं जिन्होंने सांप्रदायिकता का मुखर विरोध अपनी रचनाओं के माध्यम से किया

है। कमलेश्वर के बारे में उनके दोस्त और साहित्यिक पत्रिका हंस के संपादक राजेन्द्र यादव का कहना है कि कमलेश्वर ने जीवन भर सांप्रदायिकता का विरोध किया। कहानीकार, उपन्यासकार, नाटक, फिल्में और पटकथा लेखक, संपादक, मीडियाकार और सबसे बढ़ कर एक अच्छे इंसान के रूप में कमलेश्वर हमेशा अपनी प्रमाणीकरण दर्ज प्रस्तुत करेंगे। कमलेश्वर की रचनाओं से गुजरते हुए यह एहसास होता है कि उनकी कहानियाँ और उनके उपन्यास एक साझी संस्कृति की स्थापना का प्रयास हैं। एक ऐसा प्रयास जिसमें संपूर्ण मानवता के लिए विराट चिंतन की भावना निहित है। कमलेश्वर का चिंतन पीड़ित और शोषित मानवता के पक्ष में नजर आता है। कमलेश्वर की रचनाओं के आईने में नजर आती उनकी विचारधारा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर एक संवेदनशील रचनाकार थे। कमलेश्वर की सर्जनात्मकता मानवीय संवेदनाओं से संपृक्त है।¹⁴ उनका साहित्य हमें यह संदेश देता है कि सच्ची आधुनिकता वही है, जो भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी महत्व दे। यही उनके कथा-साहित्य की स्थायी प्रासंगिकता है।

आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं में कमलेश्वर

हिंदी साहित्य के 'नई कहानी' आंदोलन ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के भारतीय समाज की जटिलताओं, विडम्बनाओं और बदलते जीवन-मूल्यों को केंद्र में रखा। इस आंदोलन के प्रमुख कथाकारों में कमलेश्वर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आधुनिक जीवन की विसंगतियों, मध्यमवर्गीय संघर्षों, मूल्य-संकट और संबंधों के विघटन को अपनी कहानियों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। कमलेश्वर का कथा-साहित्य आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं का सजीव दस्तावेज है। आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि मनुष्य भौतिक रूप से सम्पन्न होते हुए भी मानसिक रूप से असंतुष्ट और अकेला है। विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया, परंतु मानवीय संबंधों की ऊष्मा कम होती गई। कमलेश्वर की कहानियाँ इस अकेलेपन और भावनात्मक रिक्तता को गहराई से चित्रित करती हैं। उनके पात्र भीड़ में रहकर भी अपने भीतर गहरे अकेले हैं। वे संवाद की तलाश में हैं, परंतु परिस्थितियाँ उन्हें आत्मकेन्द्रित बना देती हैं। "मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासदी कमलेश्वर के कथा-संसार का मुख्य आधार है। आधुनिक समाज में मध्यमवर्ग आर्थिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा की होड़ और असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है। सीमित आय और बढ़ती आवश्यकताओं के बीच व्यक्ति निरंतर संघर्ष करता है। 'राजा निरबंसीया' जैसी कहानी में सामाजिक प्रतिष्ठा और आडंबर के पीछे छिपी विडम्बना को उजागर किया गया है। यहाँ व्यक्ति अपने सम्मान और अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रयासरत है, किंतु अंततः परिस्थितियों के सामने विवश हो जाता है।¹⁸ आधुनिक जीवन में संबंधों का विघटन भी एक प्रमुख समस्या है। संयुक्त परिवारों का टूटना, दाम्पत्य संबंधों में तनाव और पीढ़ियों के बीच संवादहीनता समाज को भीतर से कमजोर कर रही है। कमलेश्वर इन परिवर्तनों को संवेदनशील दृष्टि से देखते हैं। उनकी कहानियों में पति-पत्नी के बीच बढ़ती दूरी, माता-पिता और संतान के बीच वैचारिक अंतर तथा सामाजिक मूल्यों का क्षरण स्पष्ट दिखाई देता है। आधुनिकता ने स्वतंत्रता तो दी, परंतु संबंधों की स्थिरता को चुनौती भी दी। नारी-जीवन की विडम्बनाएँ भी कमलेश्वर की कहानियों में प्रमुखता से उभरती हैं। "आधुनिक समाज में स्त्री को शिक्षा और रोजगार के अवसर मिले, परंतु मानसिकता में पूर्ण परिवर्तन नहीं आया। स्त्री आज भी परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती है। कमलेश्वर स्त्री की संवेदनाओं और उसकी स्वतंत्र पहचान को सम्मान देते हैं। वे दिखाते हैं कि आधुनिकता तभी सार्थक होगी, जब स्त्री पुरुष संबंध समानता और परस्पर सम्मान पर

आधारित हों। आधुनिक जीवन की एक और विडम्बना मूल्य संकट है। पारंपरिक नैतिक मूल्यों का हास और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति ने समाज में स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया है।²⁰ सफलता और धन को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लिया गया है। कमलेश्वर इस प्रवृत्ति की आलोचना करते हैं। उनके पात्र अक्सर नैतिक द्वंद्व से गुजरते हैं। वे गलतियाँ करते हैं, परंतु उनके भीतर संवेदनशीलता और पश्चाताप की भावना जीवित रहती है। यही उनकी कहानियों को मानवीय बनाता है। "शहरी जीवन की भागदौड़ और मशीनवत दिनचर्या भी आधुनिकता की विडम्बना है। व्यक्ति अपने कार्य और जिम्मेदारियों में इतना उलझ जाता है कि उसके पास आत्ममंथन का समय नहीं बचता। कमलेश्वर के पात्र इसी यांत्रिक जीवन से त्रस्त दिखाई देते हैं। वे जीवन के अर्थ और उद्देश्य की खोज में हैं, परंतु परिस्थितियाँ उन्हें भटकाती रहती हैं। कमलेश्वर की भाषा और शैली उनकी विचारधारा को और अधिक प्रभावी बनाती है। सरल, सहज और व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से वे आधुनिक समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं। उनकी कहानियाँ उपदेशात्मक नहीं हैं, बल्कि यथार्थ का आईना प्रस्तुत करती हैं। वे पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि प्रगति की इस दौड़ में कहीं हम अपनी संवेदनाएँ और मानवीयता तो नहीं खो रहे।¹⁷ "कमलेश्वर का कथा-साहित्य केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि उसमें मानवीय संवेदना की एक सूक्ष्म धारा भी प्रवाहित होती है। उनके पात्र पूरी तरह निराश नहीं हैं; वे संघर्ष करते हैं, टूटते हैं, परंतु कहीं न कहीं आशा की एक किरण भी मौजूद रहती है। यही उनकी रचनाओं की शक्ति है। अंततः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं के सजग और संवेदनशील कथाकार हैं।²¹ उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि आधुनिकता का अर्थ केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और संबंधों की रक्षा भी है। उनका कथा-साहित्य हमें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है और यह संदेश देता है कि सच्ची प्रगति वही है, जिसमें संवेदनशीलता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन बना रहे। इसी कारण कमलेश्वर की कहानियाँ आज भी प्रासंगिक और जीवन्त प्रतीत होती हैं।

निष्कर्ष:

आधुनिक जीवन अपने साथ अनेक उपलब्धियाँ लेकर आया है विज्ञान, तकनीक, संचार, शिक्षा और लोकतांत्रिक चेतना का अभूतपूर्व विकास। किंतु इसी विकास की प्रक्रिया में मनुष्य ने कई मानवीय मूल्यों और आत्मीय संबंधों को भी खो दिया है। यही विरोधाभास आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह भौतिक प्रगति की दौड़ में अपनी संवेदनशीलता खोता जा रहा है। संबंध औपचारिक होते जा रहे हैं, परिवारों में संवादहीनता बढ़ रही है और आत्मीयता की जगह स्वार्थ ने ले ली है। बाहरी रूप से समृद्ध होते हुए भी व्यक्ति भीतर से रिक्त, अकेला और असुरक्षित अनुभव करता है। कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक जीवन के अंतर्विरोधों का सजीव दस्तावेज हैं। उन्होंने समाज के मध्यमवर्गीय जीवन को केंद्र में रखकर उसकी आर्थिक, सामाजिक और मानसिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया। हिंदी कथा-साहित्य में इन जटिलताओं को जिस गहराई और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है, उसमें कमलेश्वर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कमलेश्वर इन विडम्बनाओं को केवल दर्शाते नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपी मानवीय संकट को भी उजागर करते हैं। आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, आर्थिक दबाव और सामाजिक असमानता ने मनुष्य को तनावग्रस्त बना दिया है। वह अपनी पहचान और सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करता है, किंतु परिस्थितियाँ उसे बार-बार पराजित करती हैं। नारी जीवन की विडम्बनाएँ भी उनके कथा का महत्वपूर्ण पक्ष हैं। आधुनिकता ने स्त्री

को शिक्षा और रोजगार के अवसर दिए, परंतु मानसिकता में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया। दाम्पत्य संबंधों में असंतुलन, स्त्री की उपेक्षा और उसकी स्वतंत्रता का सीमित दायरा आज भी चुनौती बना हुआ है। कमलेश्वर इन प्रश्नों को संवेदनशीलता के साथ उठाते हैं और यह संकेत देते हैं कि आधुनिकता तभी सार्थक होगी, जब स्त्री-पुरुष संबंधों में वास्तविक समानता और सम्मान स्थापित होगा। वे दिखाते हैं कि आधुनिकता ने मनुष्य को सुविधाएँ तो दीं, पर उसकी आत्मीयता और सामूहिकता को कमजोर कर दिया। कमलेश्वर की भाषा और शैली भी उनकी विचारधारा का समर्थन करती है। सरल, सहज और संवादप्रधान शैली के माध्यम से वे जीवन की कठोर सच्चाइयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। व्यंग्य और यथार्थ के मेल से वे आधुनिक समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं का आईना हैं। वे हमें यह एहसास कराती हैं कि केवल भौतिक प्रगति पर्याप्त नहीं है। यदि संवेदनाएँ, नैतिक मूल्य और मानवीय संबंध सुरक्षित नहीं रहेंगे, तो आधुनिकता अधूरी रह जाएगी। इस प्रकार कमलेश्वर का कथा साहित्य आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उनकी कहानियाँ न केवल यथार्थ का प्रतिबिंब हैं, बल्कि मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का आह्वान भी करती हैं। यही उनकी साहित्यिक प्रासंगिकता और स्थायित्व का आधार है।

संदर्भ सूची:

1. कमलेश्वर के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन मूल्यों की पड़ताल, सिंह राघवेंद्र, 2023
2. कमलेश्वर का कथा साहित्य संवेदना और शिल्प, पटेल गोपेश्वर कुमार, 2019
3. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, देसाई, मंजुला, 2024
4. बदलते सामाजिक साहित्यिक सन्दर्भ कमलेश्वर का कथा साहित्य, जयसवाल, विवेक कुमार, 2021
5. कमलेश्वर की कहानियाँ मैं आम आदमी, शुक्ला, लक्ष्मी कांत, 2021
6. कमलेश्वर का कथा साहित्य, मिश्रा प्रभाकर, 2019
7. कमलेश्वर का कथात्मक साहित्य विविध आयाम, शिंदे, रमेश माणिकराव, 2016
8. कमलेश्वर की कहानियाँ शिल्पगत वैश्य, मिश्रा, प्रतिमा, 2016
9. कमलेश्वर के कथा साहित्य में मानवीय मूल्य, देवी, रीना, 2021
10. कमलेश्वर के उपन्यास सामाजिक और आर्थिक परिवेस, चिखलीकर, सत्यजीत, 2016
11. नगरिया बोध के सन्दर्भ में कमलेश्वर की कहानी साहित्य, कुमारी, मीना, 2016
12. युचेतना की अवधारण के सन्दर्भ में कमलेश्वर की कहानी संसार का विवेचना, विवेकानन्द गुप्त, 2022
13. कमलेश्वर की साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों का सामाजिक परिचय, मंडल, सुभाष, 2025
14. कमलेश्वर कथा साहित्य एक अभिनव दृष्टि, सुरजीत कुमार, 2023
15. कमलेश्वर की कहानी साहित्य परम्परा और प्रयोग, राजपूत, योगेन्द्र सिंह, 2017
16. भारतीय मध्यवर्ग का चरित्र एवं कमलेश्वर का कथा साहित्य, मधुबाला, 2022
17. कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयाम एक अध्ययन यादव, शिव कैलाश, 2025
18. कमलेश्वर के कथा साहित्य में मध्यवर्ग, बिंदु बाला, 2022
19. कमलेश्वर की कहानियाँ समाजशास्त्री अध्ययन यादव, विजयलक्ष्मी, 2023

20. कमलेश्वर के कथा साहित्य में जीवन मूल्या रंजना, जयसवाल, 2025
21. कमलेश्वर के कथा साहित्य में मूल्यबोध के विविध आयाम तिवारी, मिथिलेश, 2021